Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC-103

Paper Title: हिंदी साहित्य का आदिकाल एवं मध्यकाल: परिचयात्मक अध्ययन

Unit: 2

Module Name: निर्गुण भक्तिकाव्य: संत काव्य

Module No: 09

Name of the Presenter: Ms. Anjeeta Velip

निर्गुण भक्तिकाव्य : संत काव्य

संत काव्य की पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल (1375-1700 ई॰) में भक्ति की दो धाराएँ सगुण तथा निर्गुण प्रवाहित हुई। सगुण धारा के अंतर्गत राम भक्ति और कृष्ण भक्ति की शाखाएँ आती है। निर्गुण के अंतर्गत संत तथा सूफी काव्य आता है। आचार्य शुक्ल ने नामदेव एवं कबीर द्वारा प्रवाहित भक्ति को 'निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा' की संज्ञा दी। डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने इसे 'संत काव्य परंपरा' का नाम दिया है। इस धारा के कवियों ने ज्ञान तत्व को महत्व दिया इसलिए ज्ञानाश्रयी नाम दिया गया। संत कवियों में कबीरदास, रैदास, दादू दयाल, नानक देवा आदि महत्त्वपूर्ण कवि हैं।

संत काव्य की सामान्य विशेषताएँ / प्रवृत्तियाँ

संत काव्य ने अनेक धार्मिक संप्रदायों के प्रभाव को आत्मसात किया है। इस काव्य में जन जीवन में सत्य की अभिव्यक्ति सीधी सादी भाषा में हुई है। संत कवियों का साहित्य निजी अनुभूतियों पर आधारित है।

निम्नलिखित संत साहित्य की प्रवृत्तियों का उल्लेख है:-

१. निर्गुण ईश्वर में विश्वास

इस शाखा के कवियों के अनुसार ईश्वर निर्गुण, निराकार, निर्विकार, वर्णनहीन है। वे ईश्वर को सर्वत्र विद्यमान मानते हैं। उनका मानना है कि प्रेम तथा योग साधना के द्वारा निर्गुण ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। वे कहते है कि ईश्वर अविनाशी तथा सर्वशक्तिमान है। उनका कहना है कि ईश्वर व्यक्ति के हृदय में भी विराजमान है। संत या ज्ञानमार्गी कवियों के अनुसार ईश्वर का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता, वह केवल अनुभवगम्य है।

२. रूढ़ियों और आडंबरों का विरोध

सभी संत कवियों ने रूढ़ियों, आडंबरों तथा अंधविश्वासों की कटु आलोचना की है। इसका कारण इन लोगों का सिद्धों और नाथपथियों से प्रभावित होना है। समाज में पायी जानेवाली कुप्रथाओं का कडा विरोध किया। इन्होंने मूर्तिपूजा, धर्म के नाम पर पाई जानेवाली हिंसा, व्रत, रोजा, नमाज आदि बाह्याडम्बरों का डटकर विरोध किया है।

३. जाति-पाति के भेद-भाव का विरोध

सभी संत कवियों ने जाति पाति और वर्ग भेद का प्रबल विरोध किया। एक ही धर्म के प्रतिष्ठापक थे। ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य बराबर है। जो व्यक्ति प्रभु का स्मरण करता है, वही उसे प्राप्त कर लेता है। इस शह के कवियों ने छुआछूत पर प्रहार कर मानवता पर बल दिया है।

‘जाति पाति पूछे नहीं कोई

हरी को भजे सो हरी का होई’

संत कवि सभी निम्न जाति से संबंध रखते थे- रैदास, कबीरदास आदि। इसके अलावा भक्ति आंदोलन में भेद भाव को तुच्छ ठहराया गया।

४. सद्गुरु का महत्त्व

गुरु को भगवान से भी अधिक महत्त्व देना संत कवियों की एक सर्वमान्य विशेषता है। इनका मानना था कि राम की कृपा तभी होती है जब गुरु की कृपा होती है। संत कवियों ने गुरु को अधिक महत्त्व दिया है।

५. नारी के प्रति दृष्टिकोण

संत कवियों ने नारी के प्रति उपेक्षा भाव प्रकट किया है। कबीर आदि संतों ने नारी के कामिनी रूप की निंदा की है उसे साधना मार्ग का सबसे बड़ा विघ्न बताया है। संत कवियों ने

नारी को माया का प्रतीक माना है। दूसरी ओर सती और पतिव्रता के आदर्श की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

६. रहस्यवाद

संत काव्य में भारतीय रहस्यवाद के दर्शन होते है। कबीरदास जी बे ब्रह्म को सत्य तथा जगत को मिथ्या कहा है। अर्थात ब्रह्म (ईश्वर) को सत्य माना तथा ब्रम्हान्ड (संसार) को असत्य माना। ज्ञानमार्गी कवि कण-कण में भगवान को देखते है। उसकी सत्ता दसों-दिशाओं में पाते है। स्वयं को आत्मा (पत्नी) तथा ईश्वर को परमात्मा (पति) रूप में स्वीकार करते है।

७. समाज-सुधार की भावना

इन कवियों में समाज सुधार की भावना प्रबल थी। इन्होंने अपने युग में प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए वाणी की शक्ति का प्रयोग किया। इन्होंने धर्मभीरुता, जाति-पाति बंधन, छुआछूत, पाखंड-आडंबर, अंधविश्वास आदि को दूर करने का प्रयास किया। ये कवि हिन्दू-मुसलमानों को सम दृष्टि अर्थात समान रूप से देखते थे।

८. भाषा शैली

संत कवि अशिक्षित थे। इन्होंने बोलचाल की भाषा को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इनकी भाषा में अवधि, ब्रज, खड़ीबोली, पूर्वी हिंदी, अरबी-फारसी, राजस्थानी, पंजाबी आदि भाषाओं के शब्द मिले हुए है। इसलिए इनकी भाषा को खिचड़ी या सधुक्कड़ी भाषा कहते है। अलंकारों का सहज रूप में प्रयोग किया है, कहीं भी ठुसने का प्रयास नहीं किया गया।